ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 456-459**

I S S N N O . - 2 3 4 7 - 2 9 4 4 (Print)
e-I S S N N O . - 2 5 8 2 - 2 4 5 4 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

गैर–पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियाँ और भारतीय सशस्त्र बलः कोविड–19 के संदर्भ में अध्ययन

डॉ0 विशाल कुमार श्रीवास्तव **Email : vksdav1@gmail.com**

Received- 08.11.2020, Revised- 15.11.2020, Accepted - 22.11.2020

सारांश– *वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा में व्यापक परिवर्तन हुआ है। परंपरागत रूप से राष्ट्रीय सुरक्षा का संबंध बाहरी सैन्य आक्रमण, सीमा विवाद, युद्ध और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा से रहा है, लेकिन इक्कीसवीं सदी में महामारी, जलवायु परिवर्तन, साइबर हमले, जैविक खतरे, आतंकवाद, खाद्य संकट तथा मानवीय आपदाएँ भी सुरक्षा के महत्त्वपूर्ण आयाम बन गई हैं। इन चुनौतियों को गैर–पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों के रूप में जाना जाता है। कोविड–19 महामारी ने इस तथ्य को स्पष्ट कर दिया कि किसी राष्ट्र की सुरक्षा केवल उसकी सैन्य शक्ति और हथियारों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसकी स्वास्थ्य व्यवस्था, प्रशासनिक क्षमता, वैज्ञानिक अनुसंधान, सामाजिक सहयोग तथा संकट प्रबंधन की दक्षता भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है।*

कुंजीभूत शब्द - गैर–पारंपरिक सुरक्षा, कोविड–19, भारतीय सशस्त्र बल, राष्ट्रीय सुरक्षा, सैन्य चिकित्सा, आपदा प्रबंधन।

असि0 प्रोफेसर– सैन्य एवं स्त्रातजिक अध्ययन, डी0ए0वी0 कालेज, कानपुर (उ0प्र0) भारत
Corresponding Author

प्रस्तावना– भारत में कोविड–19 महामारी के दौरान भारतीय सशस्त्र बलों ने चिकित्सा सहायता, ऑक्सीजन आपूर्ति, परिवहन, विदेशों से नागरिकों की वापसी, क्वारंटीन सुविधाओं की स्थापना तथा नागरिक प्रशासन के सहयोग जैसे अनेक कार्य किए। भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना ने अपनी संगठनात्मक क्षमता, अनुशासन, तकनीकी संसाधनों और त्वरित प्रतिक्रिया के माध्यम से महामारी प्रबंधन में योगदान दिया। इस अनुभव ने राष्ट्रीय सुरक्षा के व्यापक स्वरूप को सामने लाते हुए नागरिक–सैन्य समन्वय, सैन्य चिकित्सा व्यवस्था और आपदा प्रबंधन की आवश्यकता को रेखांकित किया।

राष्ट्रीय सुरक्षा किसी भी संप्रभु राष्ट्र के अस्तित्व, स्थिरता और विकास का आधार होती है। परंपरागत सुरक्षा दृष्टिकोण में सैन्य शक्ति, सीमा सुरक्षा, प्रतिरोधक क्षमता तथा शत्रु राष्ट्रों से उत्पन्न खतरों को प्रमुख स्थान दिया जाता था। इस दृष्टिकोण के अनुसार सशस्त्र बलों का मुख्य दायित्व देश की सीमाओं की रक्षा करना, युद्ध की स्थिति में शत्रु को पराजित करना तथा राष्ट्रीय संप्रभुता की सुरक्षा करना था। किंतु वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, अंतरराष्ट्रीय संपर्कों और बदलती मानवीय परिस्थितियों ने सुरक्षा की पारंपरिक अवधारणा को अधिक व्यापक बना दिया है।

गैर–पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियाँ वे खतरे हैं जो केवल सैन्य आक्रमण के माध्यम से उत्पन्न नहीं होते, बल्कि समाज, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य, पर्यावरण, तकनीकी व्यवस्था और मानवीय जीवन को प्रभावित करते हैं। इनमें महामारियाँ, प्राकृतिक आपदाएँ, जैविक संकट, साइबर अपराध, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य असुरक्षा तथा संगठित अंतरराष्ट्रीय अपराध शामिल हैं।

इन चुनौतियों की विशेषता यह है कि वे इन राष्ट्रीय सीमाओं का सम्मान नहीं करतीं और उनके प्रभावों को केवल सैन्य कार्रवाई से नियंत्रित नहीं किया जा सकता। कोविड–19 महामारी इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण है।

वर्ष 2019 के अंत में सामने आए कोरोना वायरस संक्रमण ने शीघ्र ही वैश्विक महामारी का रूप ले लिया। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 11 मार्च 2020 को कोविड–19 को महामारी घोषित किया। इस महामारी ने विश्व की स्वास्थ्य प्रणालियों, अर्थव्यवस्थाओं, परिवहन व्यवस्था और सामाजिक जीवन को गंभीर रूप से प्रभावित किया। भारत भी इससे व्यापक रूप से प्रभावित हुआ। संक्रमण की तीव्रता, स्वास्थ्य सुविधाओं पर दबाव, ऑक्सीजन की कमी, प्रवासी श्रमिकों की समस्याएँ तथा आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति जैसी चुनौतियों ने प्रशासन के समक्ष असाधारण परिस्थितियाँ उत्पन्न कीं। ऐसी स्थिति में भारतीय सशस्त्र बलों की भूमिका केवल सीमा सुरक्षा तक सीमित नहीं रही। उन्होंने अपनी चिकित्सा विशेषज्ञता, परिवहन क्षमता, रसद प्रबंधन और अनुशासित कार्यप्रणाली के माध्यम से राष्ट्रीय संकट के समाधान में योगदान दिया। इस प्रकार कोविड–19 ने यह स्पष्ट किया कि आधुनिक राष्ट्रीय सुरक्षा में सैन्य शक्ति का उपयोग केवल युद्ध के समय ही नहीं, बल्कि व्यापक मानवीय संकटों के दौरान भी महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

गैर–पारंपरिक सुरक्षा की अवधारणा एवं स्वरूप– गैर–पारंपरिक सुरक्षा की अवधारणा का विकास शीतयुद्ध के अंतिम चरण और उसके बाद अधिक व्यापक रूप से हुआ। पारंपरिक सुरक्षा में राष्ट्र–राज्य को सुरक्षा का प्रमुख केंद्र माना जाता है, जबकि गैर–पारंपरिक सुरक्षा में व्यक्ति, समुदाय, समाज गैर–पारंपरिक सुरक्षा में व्यक्ति, समुदाय,समाज पर्यावरण और वैश्विक व्यवस्था को भी महत्त्व दिया जाता है। इस दृष्टिकोण का संबंध मानव सुरक्षा की अवधारणा से भी है, जिसमें व्यक्ति के जीवन, स्वास्थ्य, आजीविका, सम्मान और भयमुक्त अस्तित्व को सुरक्षा का महत्त्वपूर्ण आधार माना गया है।

गैर–पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

पहली, इनका प्रभाव सीमाओं से परे होता है। संक्रामक रोग एक देश से दूसरे देश तक अंतरराष्ट्रीय यात्रा और संपर्क के माध्यम से फैल सकते हैं।

दूसरी, इन चुनौतियों का समाधान बहुआयामी होता है। इनमें प्रशासन, स्वास्थ्य संस्थानों, वैज्ञानिक संगठनों, पुलिस, सशस्त्र बलों तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के बीच समन्वय आवश्यक होता है। तीसरी, इनका प्रभाव केवल तत्काल संकट तक सीमित नहीं रहता, बल्कि आर्थिक असमानता, बेरोजगारी,शिक्षा और सामाजिक स्थिरता पर

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

दीर्घकालिक प्रभाव भी डाल सकता है।

कोविड–19 ने गैर–पारंपरिक सुरक्षा के कई आयामों को एक साथ उजागर किया। महामारी ने सार्वजनिक स्वास्थ्य को राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़ दिया। अस्पतालों में बिस्तरों, चिकित्सकीय उपकरणों, दवाओं और ऑक्सीजन की उपलब्धता राष्ट्रीय संकट प्रबंधन के प्रमुख विषय बन गए। साथ ही, डिजिटल प्रणालियों पर बढ़ती निर्भरता के कारण साइबर सुरक्षा और विश्वसनीय सूचना प्रसार का महत्त्व भी बढ़ा। इस प्रकार गैर–पारंपरिक सुरक्षा को केवल सैन्य विषय मानना उचित नहीं है। यह एक समन्वित राष्ट्रीय दृष्टिकोण की माँग करती है, जिसमें सैन्य शक्ति को नागरिक संस्थाओं की क्षमता के पूरक के रूप में उपयोग किया जाए।

कोविड–19 महामारी और भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा– कोविड–19 महामारी ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष एक ऐसी चुनौती प्रस्तुत की, जिसमें पारंपरिक सैन्य खतरे की अनुपस्थिति के बावजूद राष्ट्र की सामाजिक और आर्थिक स्थिरता प्रभावित हुई। संक्रमण के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए मार्च 2020 में देशव्यापी लॉकडाउन लागू किया गया। इससे सार्वजनिक गतिविधियाँ, औद्योगिक उत्पादन, परिवहन और रोजगार प्रभावित हुए। स्वास्थ्य संस्थानों पर बढ़ते दबाव ने यह स्पष्ट कर दिया कि महामारी केवल चिकित्सा संबंधी समस्या नहीं, बल्कि राष्ट्रीय क्षमता की व्यापक परीक्षा है। महामारी के दौरान राष्ट्रीय सुरक्षा के अनेक आयाम सामने आए। सबसे पहला आयाम सार्वजनिक स्वास्थ्य था। संक्रमण के प्रसार को रोकने, परीक्षण सुविधाओं का विस्तार करने, अस्पतालों में उपचार उपलब्ध कराने तथा चिकित्साकर्मियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता थी। दूसरा आयाम आर्थिक सुरक्षा का था। लॉकडाउन के कारण अनेक श्रमिकों की आजीविका प्रभावित हुई और आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान उत्पन्न हुआ।

तीसरा आयाम सामाजिक सुरक्षा से संबंधित था। प्रवासी श्रमिकों की आवाजाही, कमजोर वर्गों की आवश्यकताएँ तथा स्वास्थ्य सेवाओं तक असमान पहुँच महत्त्वपूर्ण समस्याएँ बनीं। चौथा आयाम सूचना सुरक्षा का था। महामारी के दौरान अफवाहों, भ्रामक सूचनाओं और अप्रमाणित उपचार संबंधी दावों ने जनमानस में भ्रम उत्पन्न किया।

पाँचवाँ आयाम रणनीतिक सुरक्षा का था। महामारी ने औषधियों, चिकित्सा उपकरणों, सक्रिय औषधीय घटकों तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन और आपूर्ति में घरेलू क्षमता की आवश्यकता को रेखांकित किया। किसी भी बड़े संकट में बाहरी आपूर्ति पर अत्यधिक निर्भरता राष्ट्रीय प्रतिक्रिया को कमजोर कर सकती है। इन परिस्थितियों में भारतीय सशस्त्र बलों की सहायता महत्त्वपूर्ण रही। उनकी प्रशिक्षित मानवशक्ति, परिवहन संसाधन, चिकित्सा इकाइयाँ, संचार व्यवस्था तथा कठिन परिस्थितियों में कार्य करने की क्षमता ने राष्ट्रीय संकट के प्रबंधन में सहयोग प्रदान किया।

कोविड–19 के दौरान भारतीय सशस्त्र बलों की भूमिका– भारतीय सेना का योगदानः भारतीय सेना ने कोविड–19 महामारी के दौरान नागरिक प्रशासन की सहायता के लिए चिकित्सा सुविधाओं, क्वारंटीन केंद्रों, रसद प्रबंधन और आवश्यक परिवहन जैसे क्षेत्रों में योगदान दिया। सेना की संगठनात्मक संरचना और विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में कार्य करने का अनुभव संकट के समय उपयोगी सिद्ध हुआ। महामारी के प्रारंभिक चरण में सेना ने विदेशों से लौटने वाले भारतीय नागरिकों के लिए क्वारंटीन सुविधाएँ स्थापित करने में सहयोग किया। सैन्य चिकित्सा संस्थानों और प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मियों की सहायता से संक्रमण की रोकथाम तथा उपचार संबंधी व्यवस्थाओं को मजबूत करने का प्रयास किया गया। सैन्य अस्पतालों में उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग आवश्यकतानुसार किया गया और चिकित्सा संसाधनों के प्रबंधन में सहायता दी गई।

वर्ष 2021 में महामारी की दूसरी लहर के दौरान देश के कई भागों में चिकित्सा ऑक्सीजन की माँग तेजी से बढ़ी। इस समय सशस्त्र बलों ने ऑक्सीजन टैंकरों, चिकित्सा उपकरणों और अन्य आवश्यक सामग्री के परिवहन में सहायता की। सैन्य चिकित्सा विशेषज्ञों की सेवाएँ तथा विभिन्न सैन्य चिकित्सा सुविधाओं का उपयोग भी महत्त्वपूर्ण रहा। सेना की एक प्रमुख विशेषता उसकी त्वरित संगठनात्मक क्षमता है। संकट के समय उपलब्ध मानव संसाधनों को निर्धारित कार्यों में लगाना, आवश्यक सामग्री का वितरण करना और कठिन परिस्थितियों में कार्य जारी रखना उसकी संस्थागत क्षमताओं का हिस्सा है। कोविड–19 के दौरान इन क्षमताओं ने नागरिक प्रशासन को सहायता प्रदान की। हालाँकि, सेना की भूमिका को सामान्य नागरिक स्वास्थ्य सेवाओं का विकल्प नहीं माना जा सकता। सेना की सहायता विशेष परिस्थितियों में अत्यंत उपयोगी होती है, लेकिन दीर्घकालिक स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों और स्थानीय प्रशासन की क्षमता मजबूत करना आवश्यक है।

भारतीय वायुसेना की भूमिकाः कोविड–19 के दौरान भारतीय वायुसेना ने रणनीतिक परिवहन और त्वरित रसद आपूर्ति के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। महामारी के कारण सामान्य परिवहन व्यवस्था प्रभावित होने पर हवाई परिवहन की उपयोगिता बढ़ गई। वायुसेना के परिवहन विमानों ने आवश्यक चिकित्सा सामग्री, उपकरणों और अन्य राहत संसाधनों को विभिन्न स्थानों तक पहुँचाने में सहायता की।

वर्ष 2021 में दूसरी लहर के दौरान देश के विभिन्न हिस्सों में ऑक्सीजन की माँग बढ़ने पर वायुसेना ने ऑक्सीजन कंटेनरों और टैंकरों के परिवहन में सहायता प्रदान की। इससे खाली टैंकरों को ऑक्सीजन उत्पादन केंद्रों तक शीघ्र पहुँचाने तथा आपूर्ति प्रक्रिया में लगने वाले समय को कम करने में मदद मिली। वायुसेना का योगदान केवल परिवहन तक सीमित नहीं था। उसकी परिचालन योजना, हवाई समन्वय और त्वरित प्रतिक्रिया की क्षमता ने संकट के समय रसद प्रबंधन को समर्थन दिया। महामारी ने यह भी स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन में परिवहन के विभिन्न साधनों के बीच समन्वय आवश्यक है। फिर भी हवाई परिवहन महँगा और संसाधन–गहन होता है। इसलिए इसका उपयोग उन परिस्थितियों में विशेष रूप से प्रभावी है, जहाँ समय की बचत, लंबी दूरी या त्वरित आपूर्ति अत्यंत आवश्यक हो। भविष्य में सैन्य और नागरिक परिवहन प्रणालियों के बीच पूर्वनिर्धारित समन्वय व्यवस्था इस क्षमता को अधिक प्रभावी बना सकती है।

भारतीय नौसेना की भूमिकाः भारतीय नौसेना ने कोविड–19 के दौरान समुद्री परिवहन, विदेशों में स्थित भारतीय नागरिकों की वापसी और चिकित्सा सहायता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। महामारी ने समुद्री मार्गों और नौसैनिक प्लेटफॉर्मों की उपयोगिता को नए संदर्भ में प्रस्तुत किया। नौसेना द्वारा संचालित ऑपरेशन समुद्र सेतु के अंतर्गत मई 2020 में विदेशों में फँसे भारतीय नागरिकों को समुद्री मार्ग से स्वदेश लाने का अभियान चलाया गया। इस अभियान के अंतर्गत नौसैनिक जहाजों के माध्यम से विभिन्न देशों से भारतीय नागरिकों को वापस लाने में सहायता दी गई। यह अभियान मानवीय सहायता और राष्ट्रीय संकट के समय विदेशों में भारतीय नागरिकों की सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता का उदाहरण

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

था। इसके अतिरिक्त, भारतीय नौसेना ने क्षेत्रीय सहयोग और आवश्यक चिकित्सा सहायता संबंधी गतिविधियों में भाग लिया। समुद्री परिवहन की क्षमता उन परिस्थितियों में उपयोगी हो सकती है, जब हवाई मार्ग सीमित हों अथवा बड़ी मात्रा में सामग्री पहुँचाने की आवश्यकता हो। नौसेना की भूमिका से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक सैन्य संस्थानों की उपयोगिता केवल समुद्री सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं है। वे मानवीय सहायता, निकासी अभियानों और अंतरराष्ट्रीय सहयोग में भी योगदान दे सकते हैं। हालांकि, ऐसे अभियानों की सफलता के लिए स्वास्थ्य जाँच, संक्रमण नियंत्रण, जहाजों पर पृथक्करण व्यवस्था और संबंधित देशों के साथ कूटनीतिक समन्वय आवश्यक होते हैं।

सैन्य चिकित्सा व्यवस्था का महत्त्वः कोविड–19 ने सैन्य चिकित्सा सेवाओं के महत्त्व को विशेष रूप से रेखांकित किया। भारतीय सशस्त्र बलों की चिकित्सा व्यवस्था सामान्य परिस्थितियों में सैनिकों के स्वास्थ्य, युद्धकालीन उपचार, अग्रिम क्षेत्रों में चिकित्सा सहायता और सैन्य अस्पतालों के संचालन पर केंद्रित रहती है। महामारी के दौरान इन क्षमताओं का उपयोग व्यापक राष्ट्रीय स्वास्थ्य आवश्यकता के संदर्भ में भी हुआ।

सैन्य चिकित्सा संस्थानों की प्रमुख विशेषताओं में प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मी, कठिन परिस्थितियों में कार्य करने का अनुभव, अनुशासित संचालन तथा सीमित संसाधनों के प्रभावी उपयोग की क्षमता शामिल है। इन गुणों ने महामारी के समय अतिरिक्त चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराने में योगदान दिया। फिर भी महामारी ने यह आवश्यकता भी सामने रखी कि सैन्य चिकित्सा प्रणाली को जैविक खतरों, संक्रामक रोगों, महामारी विज्ञान और सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में निरंतर विकसित किया जाए। संक्रमण नियंत्रण, प्रयोगशाला क्षमता, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों, चिकित्सा ऑक्सीजन और डिजिटल स्वास्थ्य प्रणालियों की उपलब्धता को दीर्घकालिक तैयारी का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

गैर–पारंपरिक सुरक्षा में सैन्य भूमिका का रणनीतिक महत्त्व– कोविड–19 के अनुभव के आधार पर भारतीय सशस्त्र बलों की भूमिका को कई रणनीतिक दृष्टियों से समझा जा सकता है।

पहला, यह राष्ट्रीय संकटों के दौरान राज्य की प्रतिक्रिया क्षमता को मजबूत करती है। जब नागरिक संस्थानों पर असाधारण दबाव पड़ता है, तब प्रशिक्षित सैन्य संसाधनों की सहायता राहत कार्यों को गति प्रदान कर सकती है।

दूसरा, सैन्य सहायता राष्ट्रीय एकता और संस्थागत विश्वास को मजबूत करने में योगदान दे सकती है। प्राकृतिक आपदाओं और महामारी के समय नागरिकों को सहायता उपलब्ध कराने से राज्य की संकट प्रबंधन क्षमता का प्रदर्शन होता है।

तीसरा, सैन्य संसाधन रसद और परिवहन व्यवस्था को प्रभावी बनाने में उपयोगी होते हैं। दुर्गम क्षेत्रों, सीमावर्ती क्षेत्रों तथा आपदा प्रभावित स्थानों में सामग्री और कर्मियों की त्वरित तैनाती आवश्यक हो सकती है।

चौथा, महामारी ने नागरिक–सैन्य समन्वय की आवश्यकता को रेखांकित किया। स्वास्थ्य मंत्रालय, गृह मंत्रालय, राज्य सरकारों, अस्पतालों, वैज्ञानिक संस्थानों और सशस्त्र बलों के बीच स्पष्ट दायित्व निर्धारण होने पर संसाधनों का बेहतर उपयोग संभव है।

पाँचवाँ, गैर–पारंपरिक सुरक्षा में सैन्य भागीदारी भारत की व्यापक सुरक्षा नीति को अधिक समावेशी बनाने में मदद कर सकती है। इसके अंतर्गत मानव सुरक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, आपदा प्रबंधन, तकनीकी तैयारी और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ जोड़ा जाता है।

हालाँकि, सैन्य सहायता का रणनीतिक महत्त्व तभी प्रभावी होता है, जब उसे नागरिक प्रशासन की आवश्यकताओं के अनुरूप संचालित किया जाए। लोकतांत्रिक व्यवस्था में सार्वजनिक स्वास्थ्य और नागरिक राहत का प्राथमिक दायित्व संबंधित नागरिक संस्थाओं का है। सशस्त्र बलों को पूरक भूमिका में रखते हुए उनकी मुख्य रक्षा संबंधी तैयारियों को भी सुरक्षित रखना आवश्यक है।

कोविड–19 के दौरान प्रमुख चुनौतियाँ और सीमाएँ– महामारी के दौरान भारतीय सशस्त्र बलों के योगदान के साथ–साथ कई चुनौतियाँ भी सामने आईं। सबसे पहली, प्रमुख चुनौती सैन्य और नागरिक दायित्वों के बीच संतुलन स्थापित करना था। भारत की सीमाओं पर निरंतर सुरक्षा संबंधी आवश्यकताएँ बनी रहती हैं। इसलिए महामारी प्रबंधन में सैन्य संसाधनों के उपयोग के दौरान राष्ट्रीय रक्षा की परिचालन आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखना पड़ता है।

दूसरी, चुनौती चिकित्सा संसाधनों की उपलब्धता से जुड़ी थी। महामारी की दूसरी लहर ने दिखाया कि किसी भी संस्थान के पास उपलब्ध संसाधन व्यापक जनसंख्या की अचानक उत्पन्न हुई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकते। ऑक्सीजन, बिस्तर, दवाओं और प्रशिक्षित कर्मियों की माँग में तीव्र वृद्धि हुई।

तीसरी, चुनौती संक्रमण के जोखिम की थी। सैनिकों और चिकित्सा कर्मियों को भी संक्रमण से सुरक्षित रखना आवश्यक था। सैन्य इकाइयों में बड़ी संख्या में कर्मियों का सामूहिक निवास और प्रशिक्षण संक्रमण नियंत्रण को जटिल बना सकता है। इसके लिए परीक्षण, पृथक्करण, टीकाकरण और स्वास्थ्य निगरानी की व्यवस्था महत्त्वपूर्ण रही।

चौथी, चुनौती समन्वय की थी। केंद्र और राज्य सरकारों, नागरिक प्रशासन तथा सैन्य संस्थानों के बीच कार्यों का स्पष्ट निर्धारण न होने पर संसाधनों के उपयोग में कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए आपदा से पहले तैयार योजनाएँ और नियमित संयुक्त अभ्यास आवश्यक हैं।

पाँचवीं, चुनौती सूचना प्रबंधन की थी। संकट के समय सही और समयबद्ध सूचना के अभाव में संसाधनों की माँग, वितरण तथा जनसंचार प्रभावित हो सकते हैं। अतः विश्वसनीय डिजिटल प्रणालियों, सुरक्षित संचार नेटवर्क और वास्तविक समय में उपलब्ध आँकड़ों की आवश्यकता है।

इन चुनौतियों से स्पष्ट होता है कि सैन्य सहायता को व्यापक राष्ट्रीय तैयारी, सार्वजनिक स्वास्थ्य निवेश और प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था के साथ जोड़ना आवश्यक है।

भविष्य के लिए संभावनाएँ एवं रणनीतिक सुझाव– कोविड–19 के अनुभवों के आधार पर भारत को गैर–पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए दीर्घकालिक रणनीति अपनानी चाहिए।

पहला, राष्ट्रीय महामारी तैयारी तंत्र को मजबूत करना। केंद्र और राज्य सरकारों के साथ सशस्त्र बलों की भूमिका, संसाधन उपलब्धता और आपातकालीन संपर्क व्यवस्था को स्पष्ट रूप से निर्धारित किया जाना चाहिए। महामारी संबंधी नियमित अभ्यासों में स्वास्थ्य संस्थानों, आपदा प्रबंधन एजेंसियों और सैन्य चिकित्सा इकाइयों की भागीदारी आवश्यक है।

दूसरा, सैन्य चिकित्सा अनुसंधान का विकास। संक्रामक रोगों की पहचान, जैविक खतरों की निगरानी, टीका अनुसंधान, संक्रमण नियंत्रण और चिकित्सा रसद के क्षेत्र में वैज्ञानिक संस्थानों के साथ सहयोग बढ़ाया जाना चाहिए। सैन्य चिकित्सा अनुसंधान को राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य लक्ष्यों के साथ समन्वित करना उपयोगी होगा।

तीसरा, आधुनिक रसद व्यवस्था का निर्माण। आवश्यक दवाओं, चिकित्सा

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

उपकरणों, ऑक्सीजन प्रणालियों और व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों के लिए आपातकालीन भंडार विकसित किए जाने चाहिए। इन भंडारों का नियमित निरीक्षण और समयबद्ध नवीनीकरण भी आवश्यक है।

चौथा, साइबर और सूचना सुरक्षा को प्राथमिकता। स्वास्थ्य प्रणालियों के डिजिटलीकरण के साथ अस्पतालों, सैन्य संचार नेटवर्क और आपूर्ति श्रृंखलाओं की साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी। भ्रामक सूचनाओं के प्रसार को रोकने के लिए प्रमाणित और समयबद्ध संचार व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए।

पाँचवाँ, नागरिक–सैन्य समन्वय को संस्थागत बनाना। महामारी और प्राकृतिक आपदाओं के दौरान कौन–सी एजेंसी किस प्रकार सहायता उपलब्ध कराएगी, इसके लिए स्पष्ट मानक संचालन प्रक्रियाएँ बनाई जानी चाहिए। इससे निर्णय लेने में विलंब कम होगा और संसाधनों का दोहराव रोका जा सकेगा।

छठा, अंतरराष्ट्रीय सहयोग का विस्तार। महामारी जैसी चुनौतियाँ किसी एक देश तक सीमित नहीं रहतीं। भारत को विश्व स्वास्थ्य संगठन, क्षेत्रीय सहयोग मंचों तथा मित्र देशों के साथ रोग निगरानी, वैज्ञानिक अनुसंधान, मानवीय सहायता और चिकित्सा सामग्री की आपूर्ति के क्षेत्रों में सहयोग मजबूत करना चाहिए।

सातवाँ, मानव सुरक्षा को राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का अभिन्न अंग बनाना। सार्वजनिक स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा, स्वच्छ पेयजल, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक सुरक्षा में निवेश बढ़ाना आवश्यक है। मजबूत नागरिक संस्थान ही सैन्य संसाधनों पर अनावश्यक निर्भरता को कम कर सकते हैं।

इन उपायों से भारतीय सशस्त्र बलों की गैर–पारंपरिक सुरक्षा संबंधी भूमिका अधिक सुव्यवस्थित और प्रभावी बन सकती है।

निष्कर्ष– गैर–पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियाँ इक्कीसवीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित कर रही हैं। कोविड–19 महामारी ने यह स्पष्ट कर दिया कि किसी राष्ट्र की सुरक्षा केवल उसकी सीमाओं, सैन्य शक्ति और रक्षा उपकरणों तक सीमित नहीं होती। स्वास्थ्य व्यवस्था, आर्थिक स्थिरता, सामाजिक सहयोग, तकनीकी क्षमता तथा संकट प्रबंधन की दक्षता भी राष्ट्रीय सुरक्षा के अनिवार्य घटक हैं।

भारत में कोविड–19 के दौरान भारतीय सेना, वायुसेना और नौसेना ने चिकित्सा सहायता, परिवहन, रसद प्रबंधन, क्वारंटीन व्यवस्था तथा विदेशों में फँसे नागरिकों की वापसी जैसे क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। ऑपरेशन समुद्र सेतु सहित विभिन्न राहत प्रयासों ने सशस्त्र बलों की मानवीय सहायता क्षमता और राष्ट्रीय संकट के समय उनकी उपयोगिता को प्रदर्शित किया। फिर भी महामारी के अनुभव ने यह स्पष्ट किया कि सशस्त्र बल नागरिक स्वास्थ्य व्यवस्था का विकल्प नहीं हैं। उनकी भूमिका नागरिक प्रशासन को पूरक सहायता प्रदान करने की होनी चाहिए। भविष्य में महामारी, जैविक संकट, जलवायु परिवर्तन, साइबर हमलों और अन्य आपदाओं से निपटने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर समन्वित रणनीति आवश्यक है।

इस दिशा में सैन्य चिकित्सा अनुसंधान, आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण, आधुनिक रसद प्रणाली, सुरक्षित डिजिटल संचार और नागरिक–सैन्य समन्वय को मजबूत करना महत्त्वपूर्ण होगा। साथ ही, सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों और वैज्ञानिक अनुसंधान में पर्याप्त निवेश किया जाना चाहिए।

अंततः, कोविड–19 ने भारत को यह महत्त्वपूर्ण सबक दिया कि राष्ट्रीय सुरक्षा का वास्तविक आधार सैन्य शक्ति और मानवीय सुरक्षा के बीच संतुलन स्थापित करना है। एक सक्षम, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संचालित तथा सहयोगपरक सुरक्षा व्यवस्था ही भविष्य की गैर–पारंपरिक चुनौतियों का प्रभावी सामना कर सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. World Health Organization- (2020),WHO Director & General's Opening Remarks at the Media Briefing on COVID&19-11 March 2020. विश्व स्वास्थ्य संगठन, जिनेवा।
2. United Nations Development Programme. (1994), Human Development Report 1994- Oxford University Press, New York.
3. Government of India, Ministry of Defence- (2020–2021)- Annual Reports. रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
4. Government of India, Ministry of Health and Family Welfare.

*****